स्वर प्रवाह

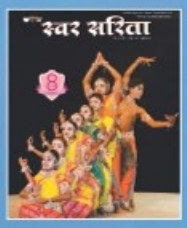

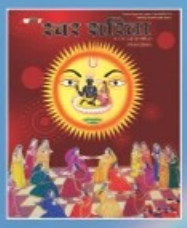
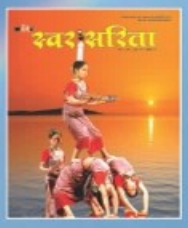
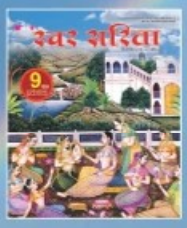
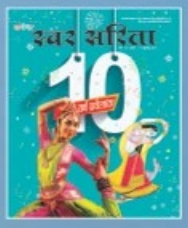
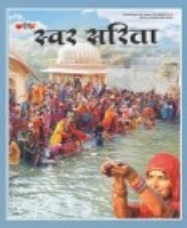
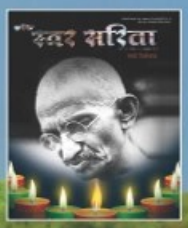

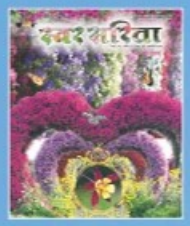
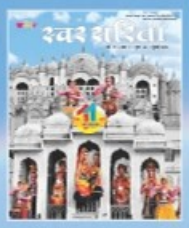
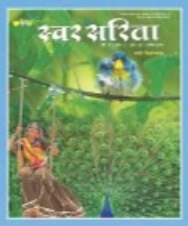
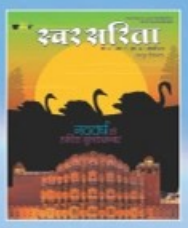

पल बीता, पक्ष बीता, मास और वर्ष बीता। देखते ही देखते बारह वर्ष का एक युग बीत गया। नवांकुर से निखरती और क्षुप से विटप बनती 'स्वर सरिता' इस अंक के साथ तेरहवें वर्ष में प्रवेश कर गई।

आज के अर्थ प्रधान युग में कला, संस्कृति एवं संगीत को लेकर प्रतिमाह श्रेष्ठ सामग्री के साथ बहुरंगी पत्रिका प्रकाशित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, विशेषकर उन स्थितियों में जब लोगों का रुझान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और आधुनिक गेजेट्स की तरफ बढ़ने से पत्रिकाओं का प्रकाशन निरन्तर सीमित होता जा रहा है। लेकिन 'स्वर सरिता' का प्रकाशन मात्र धनोपार्जन के लिए नहीं किया गया था, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य युवा पीढ़ी के संस्कारों को संस्कारित करना, उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ना और अपनी माटी के संगीत के प्रति रुचि जाग्रत करना था। अत: अनेक अवरोधों और आर्थिक कठिनाइयों के उपरांत भी हमारा यह सारस्वत प्रयास और सांस्कृतिक अनुष्ठान निरंतर जारी रहा। इसके लिए के.सी. मालू निश्चय ही बधई के पात्र हैं।

गत बारह वर्षों की इस अबाध यात्रा के दौरान 'स्वर सरिता' ने अपने प्रत्येक अंक में कला, संस्कृति, संगीत, हस्तशिल्प एवं पर्यटन सम्बंधी रोचक, सारगर्भित एवं संदर्भ की दृष्टि से संग्रहणीय सामग्री पाठकों को उपलब्ध कराई है। विशेषांकों की श्रृंखला में तो 'स्वर सरिता' के अंकों ने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इनमें प्रतिवर्ष जल विशेषांक, गांधी विशेषांक, वसंत विशेषांक, होली विशेषांक तथा राजस्थान दिवस विशेषांक प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। संदर्भ की दृष्टि से 'स्वर सरिता' के अश्व अंक, वृक्ष अंक, ठुमरी अंक, लोरी अंक तथा पर्यटन अंकों ने भी बहुत ख्याति अर्जित की तथा पाठकों द्वारा बहुत सराहे गए। संग्रहणीय सामग्री उपलब्ध कराने का हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

'स्वर सरिता' के प्रत्येक अंक में स्तरीय सामग्री जुटाने में रचनाशील लेखकों तथा प्रकाशन को नियमित बनाए रखने में विज्ञापनदाताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हम इनके प्रति हृदय से आभारी हैं। आशा है भविष्य में भी उनका सक्रिय सहयोग मिलता रहेगा। इसी विश्वास के साथ 'स्वर सरिता' का तेरहवें वर्ष का प्रथम अंक आपके हाथा में-